ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No. :UPBIL04292,
RNI REG. No.: UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No.: 561/2013-14 Vol.-5, No.-II, PP-254-256,YEAR- DEC.2016

वैश्विक परिवेश में प्रजातांत्रिक मूल्य और पत्रकारिता की भूमिका

❑ डॉ0 मुकेश गुप्ता

मनुष्य जिस समाज में रहता है वह समाज सभ्य और सुसंस्कृत माना जाता है। सभ्य इसलिए कि उसने अपने लिए व्यवस्था सम्मत् चिन्तन पद्धति को अपनाया है और सुसंस्कृत इसलिए कि आचरण और संस्कार की परिपाटी को उसने स्वीकार किया है। मानवीय सभ्यता के बीच जो सबसे अच्छी स्थिति है, वह यह है कि मनुष्य सम्प्रेषण की कला से जुड़ा है। सम्प्रेषण मनुष्य के सामाजिक होने का बहुत बड़ा प्रमाण है। प्रजातंत्र ऐसे ही संवेदनशील व्यक्तियों का एकत्रित स्वरूप है।

प्रत्येक देश का प्रजातंत्र उसकी सबसे बड़ी शक्ति होता है। प्रजातंत्र की सफलता के लिए कई पक्ष महत्वपूर्ण माने जाते हैं। भारत जैसे प्रजातांत्रिक देश में प्रजातंत्र की सफलता के चार प्रमुख स्तम्भ माने गये हैं, इनमें व्यवस्थापिका, कार्यपालिका, न्याय पालिका और प्रेस को स्वीकार किया गया है।

लोकतंत्र के चतुर्थ स्तम्भ के रूप में स्वीकृत पत्रकारिता ने भारतीय समाज को नवीनतम् आयाम प्रदान किये हैं। लगभग एक शतक से भी अधिक वर्षों से सक्रिय पत्रकारिता ने सामाजिक चिन्तन को बदलने में अपनी भूमिका का बाखूबी निर्वाह किया है। प्रिन्ट और इलैक्ट्रानिक दोनों ही माध्यमों से उपलब्ध भारतीय पत्रकारिता लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा में निरन्तर सचेत और सक्रिय है। "पत्रकारिता या प्रेस की शक्ति के प्रादुर्भाव से प्रेस प्रजातांत्रिक व्यवस्था के जिस सक्रिय स्तम्भ के रूप में विकसित हुआ, उसने जनता और शासन के बीच आदर्श स्थितियों के निर्माण की परम्परा कायम की। समझदारी, संतुलन तथा नियमितता बनाये रखने में पत्रकारिता ने अपनी भूमिका का बाखूबी निर्वाह किया है।"[1]

पत्रकारिता को लोकतंत्र का चतुर्थ स्तम्भ इसलिए कहा जाता है कि वह शासन व्यवस्था और जनता के बीच सीधा संवाद स्थापित कराती है। शासन की नीतियों, उसके कार्यकलापों एवं उसकी कार्यविधियों को जनता तक पहुँचाने का कार्य पत्रकारिता ही करती है। इसी प्रकार जनजीवन की भावनाओं को शासन स्तर तक पहुँचाने का कार्य भी पत्रकारिता ही करती है। "आज के युग में जनजीवन की भावनाओं को समझे बिना उसका मूल्यांकन करना कठिन है। शासन स्तर पर जिन नीतियों का निर्धारण किया जाता है, उन्हें क्रियान्वयन हेतु जनजीवन तक सम्प्रेषित करने का कार्य पत्रकारिता द्वारा ही सम्भव हो पाता है।"[2]

वस्तुतः जब सक्रिय पत्रकारिता की बात की जाती है, तो यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि प्रजातांत्रिक संदर्भों की गहरी पड़ताल की जाए। क्योंकि आज का समाज अत्यधिक जागरूक है, इसलिए ऐसे में पत्रकारिता का दायित्व और अधिक बढ़ जाता है। वर्तमान के कुछ संदर्भों को अगर ध्यान से देखा जाए, तो एक बात बहुत बेहिचक कही जा सकती है कि कभी–कभी पत्रकारिता सक्रिय विपक्ष की भूमिका में भी खड़ी हो जाती है। आज जब ग्लोबल वर्ल्ड की बात चल रही है, तब ऐसे में पत्रकारिता का सचेत होना बहुत जरूरी है।

लोकतंत्र की स्थापना का सबसे बड़ा आधार जनमत माना जाता है और जनमत के बिना राष्ट्र की परिकल्पना असंभव है। भारत जैसे प्रजातांत्रिक राष्ट्र में जनमत की महत्ता को स्थापित करने के लिए भी सक्रिय रूप से पत्रकारिता का होना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शासक और शासित के मध्य प्रेस के माध्यम से जो संवाद स्थापित किया जाता है, उसकी सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि वह समन्वय की दोहरी भूमिका निभाता है। एक तरफ वह जनता के बीच जाकर स्वयं संतुलन स्थापित करता

❑ ऐसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग एम.एच. पी.जी. कॉलेज, मुरादाबाद, (उ0प्र0), भारत

है और दूसरा जनमत को शासन तक प्रेषित करने का कार्य भी करता है।

लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रेस का सबसे महत्वपूर्ण कार्य लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना और उनकी रक्षा करना है। एक तरफ प्रेस शासन के सार्वजनिक आचरण पर नियंत्रण रखने का कार्य करता है, तो दूसरी तरफ उन्हें साफ–सुथरे शासन प्रक्रिया को संचालित करने के लिए बाध्य भी करता है।

"स्वस्थ प्रजातांत्रिक व्यवस्था के लिए पत्रकारिता लोगों को उसके जनतांत्रिक अधिकारों के प्रति सचेत और सतर्क भी कराती चलती है। जनता संविधान से जिन अधिकारों को प्राप्त करती है और उसका जिस तरीके से प्रयोग होता है, उसे संज्ञान में लाने का कार्य पत्रकारिता के द्वारा ही होता है।"[3] पत्रकारिता का यह बहुत बड़ा योगदान है कि जनजीवन के बीच राजनैतिक और सामाजिक चेतना का प्रचार निरन्तर किया जा रहा है। यह प्रेस का ही योगदान है कि देश का प्रत्येक नागरिक चुनाव की प्रक्रिया और शासन की व्यवस्था को भलीप्रकार से आत्मसात् कर सका है।

प्रजातांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए भी पत्रकारिता निरन्तर सक्रिय रहती है। प्रजातांत्रिक मूल्यों पर स्वस्थ बहस आयोजन के माध्यम से जनमत तैयार करना भी पत्रकारिता का बहुत बड़ा कार्य है। राष्ट्रीय स्तर पर जनता के हितों की समय–समय पर समीक्षा प्रेस के माध्यम से निरन्तर की जाती रही है। राष्ट्रीय स्तर पर ज्वलंत सामाजिक मुद्दों की परिचर्चा प्रस्तुत करके एक स्वस्थ वातावरण तैयार करने में पत्रकारिता की भूमिका वर्णेय होती है।

समय–समय पर विशेष बौद्धिक परिचर्चाओं और लेखों के द्वारा जनजीवन को सशक्त बनाने का कार्य भी पत्रकारिता के द्वारा संभव होती है। जनता की नब्ज को टटोलने में सबसे बड़ी भूमिका पत्रकारिता की ही है।

"प्रेस संतुलन और नियंत्रण के सिद्धान्त को अपनाकर चलती है। इस सिद्धान्त से एक तरफ जहाँ जनमानस की उग्रता को संतुलित करने में सहायता मिलती है, वहीं दूसरी तरफ शासक वर्ग की नीतियों का नियंत्रण भी स्थापित होता है।"4 शासन के प्रति लोगों की भावना और लागों के प्रति शासन के उत्तरदायित्व, इन दोनों का बोध पत्रकारिता ही कराती है। जनता को उसके सामाजिक अधिकारों को दिलाने में भी पत्रकारिता की भूमिका महत्वपूर्ण है।

वर्तमान संदर्भों में अगर देखा जाए तो यह सहज रूप से स्पष्ट हो जाता है कि दो विपरीत समाज परम्पराओं की भूमिका सबसे अधिक होती है। अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर राष्ट्र के स्वाभिमान से जुड़े मुद्दों को उठाने में भी पत्रकारिता का स्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू ने प्रेस की महत्ता और उसकी स्वतंत्रता पर निरन्तर बल दिया था और उन्होंने प्रेस को शक्तिशाली चतुर्थ स्तम्भ का स्थान दिया था।

उन्होंने यह स्वीकार किया था कि किसी भी देश को सुव्यवस्थित ढंग से चलाने के लिए जहाँ कार्यपालिका, न्यायपालिका और विधायिका रूपी तीन स्तम्भों की आवश्यकता होती है, वहीं इन तीनों के मध्य तथा इन तीनों से सामान्य लोगों को जोड़े रखने का महत्वपूर्ण कार्य प्रेस या समाचार पत्र या मीडिया के अन्य साधन करते हैं।

इसी कारण पं0 नेहरू ने स्वतंत्र प्रेस की स्थापना की वकालत की थी। उन्होंने कहा था– "I would rather have a completely free press with all the dangers involved in the very use of that freedom and suppressed and regulated press."[5]

उपर्युक्त संदर्भों के आलोक में यह कहना समीचीन होगा कि 21वीं शताब्दी में जिस ग्लोबल वर्ल्ड की परिकल्पना की जा रही है और जनता की जागरूकता का जो प्रश्न उठाया जा रहा है, उसमें मीडिया की भूमिका सर्वाधिक प्रासंगिक है। प्रजातांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए मीडिया की जागरूक भूमिका आज नितान्त आवश्यक और अपेक्षित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी पत्रकारिता का परिचय, डॉ0 आशीष कुमार, पृ0 74.
2. जनसंचार और हिन्दी पत्रकारिता, डॉ0 ए0के0 तिवारी, पृ0 110.
3. पत्रकारिता के विविध आयाम, डॉ0 सुजाता वर्मा, पृ0 64.
4. प्रेस प्रबन्धन, डॉ0 लक्ष्मी शंकर दास, पृ0 180.
5. हिन्दी की संवैधानिक स्थिति और प्रेस आचार संहिता, डॉ0 वी0एस0 भाल, पृ013.